ISSN: 3107-3557(Online)
The Knowledge Spectrum - An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

अमृतलाल नागर की औपन्यासिक सृष्टि का अमर चरित्र : सूरदास

Dr. B. J. Patel
Associate Professor in Hindi

हिन्दी साहित्य में अब तक व्यापक परिमाण में गद्य-पद्य के अंतर्गत अनेकानेक विधाओं में कालजयी साहित्य लिखा गया है, वस्तुतः यह अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है । यहाँ हिन्दी में कालजयी उपन्यासों की कमी नहीं है । समय गुज़रते कथा का रूख बदला है, चरित्र बदले हैं, लेखक भी नई सोच के साथ साहित्य के मैदान में आये हैं ! हमने उन सब का विवेचनात्मक दृष्टि से स्वागत किया है । साहित्य के जरिए ही हमें कुछ ऐसे रचनाकारों व चरित्रों की उपलब्धि हुई है, जिसे हम कालजयी अमर चरित्रों के रूप में व्याख्यायित कर सकते हैं । कहा जा सकता है कि उन अमर चरित्रों के सर्जक भी अपनी लेखनी के बल पर साहित्य जगत में अमर हो गए हैं । संसार में प्रतिक्षण कई जीवात्माओं का आवागमन होता रहता है, उनमें हर एक की सांसारिक पहचान में कोई विशेष उल्लेखनीय विशेषता या गुणावगुण अवश्य होते हैं ! परंतु उनमें कुछ ही अपनी चारित्रिक विशेषता के कारण अपना नाम रोशन कर जाते हैं । ठीक उसी प्रकार उपन्यासों के अनगिनत चरित्रों में कुछ ऐसे चरित्र हैं, जो अपनी चारित्रिक योग्यता के बल पर अपनी अमरता का परचम लहराते हैं ।

अस्तु, हम यहाँ उपन्यास विधा के महान सर्जक श्री अमृतलाल नागर के कतिपय अमर चरित्रों में से सूरदास के संदर्भ में यहाँ जाँच-पड़ताल कर रहे हैं । नागर जी के इस चरित्र की अमरता के प्रति श्रद्धाभाव रखते हुए अपनी दृष्टि से चरित्रांकन करने की कोशिश की है । हमने यहाँ नागर जी की रचना-प्रक्रिया व अपनी चरित्र-सम्बन्धी मान्यताओं के आधार पर सूरदास के व्यक्तित्व को निखारने का छोटा-सा प्रयास मात्र किया है । हो सकता है, अपनी निजी मर्यादा के कारण बहुत सारी बातें छूट गई हो, परंतु सूरदास के चरित्र का स्तर तथा उनके आदर्शों का तथ्यात्मक विवरण देने का उपक्रम ही उनकी अमरता का द्योतक है । इस आलेख में चरित्र की अमरता, अमर चरित्र का स्वरूप, अमर चरित्र का निकष और अमर चरित्र का मानक तलाशने की कोशिश की गई है ।

चरित्र की अमरता, स्वरूप, निकष और मानक की अवधारणा :

अमर चरित्र की अमरता व्यख्यायित करने से पहले यह देखें कि 'चरित्र' का कोशगत अर्थ क्या होता है ? मानक हिन्दी कोश के आधार पर 'चरित्र' (चर् + इत्र) यानी (1) वे सब बातें जो आचरण, व्यवहार आदि के रूप में की जायँ । किया या किए हुए काम । कार्य-कलाप । (2) अच्छा आचरण या चाल-चलन । सदाचार। जैसे-चरित्रवान् । (3) जीवन में किए हुए कार्यों का विवरण। जीवन-चरित । जीवनी । (4) कहानी, नाटक आदि में कोई पात्र । (5) कोई महान अथवा श्रेष्ठ व्यक्ति ।[1] सरसरी तौर पर यही कहा जा सकता है कि 'चरित्र' के अंतर्गत व्यक्ति मात्र की वे सब बातें समाविष्ट होती है, जो स्व के वर्तन-व्यवहार से उसके जीवन को आगे ले जाती है । यदि कोई व्यक्ति महान या श्रेष्ठ बना है, तो वह अपनी चारित्रिक सक्षमता के कारण । अतः चरित्र की अमरता के लिए पात्र के समग्रतया वर्तन-व्यवहार का समावेशन हो जाता है ।

पात्र से सम्बद्ध है चरित्र । प्रायः पात्र और चरित्र को एक मान लिया जाता है, परंतु हक़ीक़त कुछ और है; पात्र और चरित्र सम्बद्ध होते हुए भी अलग है । समाज में विचरण करने वाले प्रत्येक प्राणी की अपनी

कुछ विशिष्टताएँ होती हैं, उसका विशिष्ट चरित्र या व्यक्तित्व होता है, जो एक व्यक्ति को दूसरे से भिन्नता प्रदान करता है । उपन्यास मानव जीवन की अभिव्यक्ति है और उसके पात्र जीवधारी मानव के प्रतिरूप हैं । अतः उपन्यास में विभिन्न पात्रों में पार्थक्य इसी चरित्र द्वारा जाना जाता है । वस्तुतः चरित्र तो पात्र के गुण दोषों का लेखा-जोखा है, उसका जीवन परिचय है ।[2] उपन्यास में पात्र के गुण दोषों, उसके आचार-व्यवहार का वर्णन, चरित्र का वर्णन, उपन्यासकार शब्दों के माध्यम से करता है । उपन्यासकार द्वारा चरित्र को रूप देने की प्रणाली चरित्र चित्रण कहलाती है । इस तरह पात्र, चरित्र और चरित्र चित्रण तीनों आपस में सम्बन्धित है ।

मानक हिन्दी कोशकार के आधार पर 'अमर' का शब्दार्थ होता है- (1) जो कभी मरे नहीं । न मरने वाला । (2) जिसका कभी अंत, क्षय या नाश न हो। सदा जीवित रहने वाला । शाश्वत । (3) चिरस्थायी ।[3] सच तो यह है कि यथार्थ जीवन से चुना हुआ कोई पात्र जब उपन्यास का चरित्र बनकर चित्रित होता है तो वह उपन्यासकार की दृष्टि, उसकी भावनाओं एवं विचारों से संपृक्त होकर एक नये तराशे हुए एवं अर्थवान रूप में प्रस्तुत होता है, जिसके माध्यम से उपन्यासकार अपने अभिप्रेत को प्रस्थापित एवं संप्रेषित करने का प्रयास करता है।[4] मूलतः उपन्यास का सर्जन कथा, पात्र और लेखकीय सायास-अनायास प्रयासों का सुफल होता है। आज हम हिन्दी उपन्यासों-उपन्यासकारों पर गर्व कर सकते हैं कि हमारे पास कभी न मिटने वाला कथ्यगत व चरित्रगत खज़ाना है।

जहाँ तक मेरी निगाहों में अमर चरित्र के स्वरूप का सवाल है, मैं यह शत-प्रतिशत मानता हूँ कि वे ऐसे पात्र होते हैं, जो एक अरसे से जन-मन में रसे-बसे होते हैं। मानवीय अच्छाई-बुराई को अपने में समाये खुद इस तरह का जीवन जीते हैं, जो समस्त मानव-जाति के लिए पथ-प्रदर्शक का काम करते हैं । ये पात्र कैसी भी परिस्थिति (नकारात्मक-सकारात्मक व्यवहार) में हमारी-पाठकों की दृष्टि से ओझल नहीं होते । चरित्र की नकारात्मक जीवन-शैली भी उसे कमजोर नहीं बनाती । यदि गहरे पानी पैठ सोचा जाए तो हमें लगता है कि जैसे तैंतीस कोटि देवी-देवताओं को अमर बनाकर यह मानव जाति उसकी पूजा करती है । ठीक वैसे ही जब कोई पात्र अपने क्रिया-कलापों से देव-देवी तुल्य बन जाता है, तब हम उसकी मन ही मन पूजा करने लगते हैं। हम पाठकीय संवेदना से उन्हें सदैव अपने हृदय में अमिट स्थान दे देते हैं। यही उसके चरित्र की अमरता का द्योतक है । ये पात्र बनावट से दूर अपने मानवीय व्यवहारों से इस तरह का जीवन जीते हैं कि कहीं भी यह नहीं लगता कि उनके द्वारा जिया गया जीवन असंभव है । इस निकष-कसौटी, मानक-उच्चता स्तर पर जो चरित्र खरा उतरता है, उस पात्र को पाठक पलकों पर बिठा लेता है ।

नागर जी अमर चरित्रों के प्रस्तोता :

हिन्दी कथाजगत् में श्री अमृतलाल नागर एक ऐसा नाम है, जिन्हें हम कथातत्त्व के मर्मज्ञ व अमर पात्रों के सर्जक के रूप में अभिहित करते हैं । नागर जी उत्तम कथा सर्जक तो हैं ही, साथ ही साथ वे अपनी औपन्यासिक सृष्टि में अनेक विध पात्रों को अपनी सशक्त लेखनी से पाठकप्रिय बनाने में समर्थ रहे हैं । वस्तुपक्ष के पश्चात चरित्र-चित्रण के तत्त्व को नागर जी ने अपने सांसारिक अनुभवों के सहारे इतना रसप्रद बनाया है कि सहज रूप से पाठक उन्हें सिद्धहस्त पात्रस्रष्टा के रूप में स्वीकृत करता है । उपन्यासकार अपने अनुभव जगत् का अर्क अपने चिंतन, दर्शन या

पात्रों के माध्यम से उपन्यास में अभिव्यंजित करता है । जब ये पात्र हमारी कल्पना शक्ति में सदैव विचरण करने लगे तो समझना चाहिए कि उपन्यासकार का चरित्रांकन सफल है । यही पात्रों की अमरता की पहचान है । नागर जी का कहना है- "मैं कभी यह कहने के लिए कदापि तैयार नहीं हो सकता कि उपन्यास लेखक को मुरौव्वत की वजह से सामाजिक असत्य का पोषण करना चाहिए । यह करने की आवश्यकता नहीं है । यह न करने लिए ही मैंने पात्रों की खोज के कार्य में अब तक रत रहकर भी अधिकतर पात्रों को प्रायः प्रतीकात्मक ढंग से गढ़ा है । पर अनेक पात्र ज्यों के त्यों भी अंकित कर देता हूँ । जगह-जगह की बोली-बानी, रीति-रिवाज, चाल-ढाल और मानव-चरित्र की विशेषताओं का अध्ययन करना अब सच पूछिये तो मेरा काम नहीं बल्कि नशा हो गया है ।"[5] उपन्यासकार इस सुख-दुःखात्मक और अनेकविध समता-विषमताओं से युक्त जगत् का हम जैसा संवेदनशील प्राणी है। इस संसार की विभिन्न घटनाएँ, जीवन के संघर्ष, उसके संपर्क में आने वाले अनेकानेक मनुष्य, उसको चेतन या अचेतन रूप से अवश्यमेव प्रभावित करते हैं ।

साहित्यकार की साधना स्वरूप उपन्यास में जो घटनाएँ एवं पात्र अवतरित होते हैं, उनकी प्रेरणा का स्रोत यह जगत् ही होता है। वह इस वस्तु जगत् के एक या अनेक मनुष्यों से प्रेरणा प्राप्त कर तथा उसमें अपनी कल्पना का रंग चढ़ा कर पात्र रूप में उपन्यास में उतार देता है। डॉ. कुसुम वार्ष्णेय को लिखे पत्र में नागर जी ने स्वीकारा था "एक चरित्र जो अपनी किसी खास विशेषता के कारण मेरे खयालों से टकराता है वह चरित्र में जस का तस रंजित नहीं करता। उस मनोवैज्ञानिक 'पैटर्न' के और चरित्रों पर भी नज़रें आप ही आप दौड़ने लगती हैं । उन सब से मिलकर मेरी कहानी का नया चरित्र गढ़ जाता है । जो पाठक को हूबहू प्रत्यक्ष नज़र आने लगते हैं और वह समझता है कि लेखक ने किसी एक व्यक्ति को जस का तस उठाकर अंकित कर दिया है । परन्तु हे डॉ. कुसुम वार्ष्णेय, यह देखो कि उस सत्य में मेरी कल्पना किस तरह से घुली है । वस्तुसत्य और कल्पना जब अपने चरित्रों और परिवेश सहित ईमानदारी से घुलाये-मिलाये जाते हैं तब पाठक, पाठिका के लिए यह कहना कठिन हो जाता है कि अमुक पात्र अथवा उसका परिवेश मैंने जीवन से जस का तस उठा लिया है या उसमें कल्पना के तत्त्व भी मिलाये गए हैं । यही कला है । कला में झूठा सच (कल्पना) भी विशुद्ध सच के रंग में रंगकर तुम्हारी दृष्टि में 'हू-ब-हूपन' पैदा करता है । कला का 'झूठ' भी सच के प्रकाशाणुओं से भरपूर होता है।"[6] सच तो यह है कि चरित्र-निर्माण के लिए अवतरित कलापूर्ण झूठा सच पाठकों को नखशिख रस-सराबोर करने में सक्षम होता है । चरित्रचित्रण विधि में नागर जी की नज़र इतनी सक्षम है कि वे चरित्र को विश्वसनीय धरातल पर लाकर खड़ा करते हैं।

नागर जी की औपन्यासिक सृष्टि के पात्र :

नागर जी की विशाल चरित्र-सृष्टि का रहस्य यही है कि उनके एक पात्र में अनेक पात्रों के सद्गुण-दुर्गुण समाविष्ट होते हैं। पात्रों की विविध अनुभूतियों के बहाने उपन्यासकार अपनी तथा समस्त मानवजाति की असंख्य अनुभूतियों का चित्रण करता है। पाठकों को वही अनुभूतियाँ विशेष रूप से छूती हैं, जिसका अनुभव थोड़ा-बहुत उपन्यासकार ने कभी-न-कभी किया हो। औपन्यासिक चरित्र अथवा पात्र इस जगत के मनुष्यों से प्रेरित और उपन्यासकार की कल्पना के रंग में रंगी शब्दमूर्तियाँ हैं, जो उपन्यास के कथानक को विकसित

करती हैं एवं उनसे विकास पाती हैं। इन शब्दमूर्तियों में से कुछ में कल्पना का रंग गाढ़ा होता है और कुछ में बहुत हल्का ।[7] रचनाकार समाज का एक जीवंत एवं विशिष्ट सदस्य होता है। पाठक की पैनी दृष्टि हरदम कोशिश करेगी कि जिन पात्रों की कहानी वह पढ़ रहा है, क्या ऐसे पात्रों का अस्तित्व उसके आस-पास है भी या नहीं ? इसलिए चरित्र चित्रण में असावधानी रखना उपन्यासकार के लिए खतरे से खाली नहीं होता। डॉ. दंगल झाल्टे का मत है "उपन्यासों में चरित्र चित्रण को जो महत्त्व प्राप्त हुआ है उसके मूल में पात्र ही हैं और ये महान पात्र, एक नहीं कभी-कभी अनेक रचयिताओं को प्रेरित कर विभिन्न रचनाओं को जन्म देने की सामर्थ्य रखते हैं। उपन्यासकार जीवन के फलक को साकार करने के लिए मनुष्य को ही पात्र-रूप में ग्रहण करता है तथा उसके चरित्र को बहु-आयामी अर्थवत्ता प्रदान कर उसे अमर बना देता है। यही कारण है कि अनेक बार उपन्यास के पात्र उपन्यास से भी अधिक ख्याति प्राप्त कर लेते हैं और उपन्यास के बदले वे ही याद रह जाते हैं।"[8] यह बात नागर जी के उपन्यासों पर पूरी तरह लागू की जा सकती है। उनके औपन्यासिक पात्र जीवित व जीवंत पात्र है। शब्दांकित किए हुए पात्र अत्र-तत्र-सर्वत्र विद्यमान हैं। नागर जी ने अपने उपन्यासों में विभिन्न स्तर के पात्रों को जीवन के टेढ़े-मेढ़े रास्तों से गुज़रते हुए दिखाकर उनकी क्रिया-प्रतिक्रिया का इस कौशल से वर्णन किया है कि पाठक उनसे भावतादात्म्य का अनुभव करता है।

नागर जी द्वारा चित्रित पात्र सप्राण, सहज एवं विश्वसनीय है। आपके किसी भी उपन्यास को पढ़ते समय पाठक को यह अनुभूति हरदम होती रहती है कि वह एक जीवन्त पात्र-सृष्टि को, चित्रपट की भाँति दृश्यावली को, अपनत्व भाव से निहार रहा है। रचनाकार चाहे जिस ढंग के चरित्रों की नियोजना करे, वे बृहत्तर समाज की किसी न किसी सच्चाई को उजागर करते हैं। अर्थात् किसी न किसी रूप से उसकी सम्पूक्ति समाज से रहती है। वे व्यक्ति के उन्हीं व्यवहारों एवं क्रिया-कलापों को रचना में स्थान देता है, जिसका उसे प्रत्यक्ष अनुभव रहा है। यहाँ तक कि ऐतिहासिक पात्रों की रचना में भी व इस युक्ति से काम लिया जाता है कि वे हमारे जाने-पहचाने से लगते हैं। अप्रत्यक्ष अनुभव से निष्पादित पात्र-पढ़कर या सुनकर-की ऐसी कलात्मक योजना की जाती है कि वे समाज के जीते-जागते प्रत्यक्ष अनुभव के चरित्र बन जाते हैं ।[9] डॉ.बी.जे.पटेल लिखते हैं- "नागर जी ने अपनी सुदीर्घ उपन्यास यात्रा में मनुष्य खड़े किये हैं, कठपुतले नहीं । ये मनुष्य गुणावगुणों से भरे हैं । यही कारण है कि वे सब जाने-पहचाने लगते हैं। ताई (बूँद और समुद्र) तथा निर्गुनियाँ (नाच्यौ बहुतगोपाल) उनके सहस्राधिक पात्रों में अद्‌भुत व अद्वितीय सर्जन हैं।"[10] हमारी ही लेखनी से लिखित पुस्तक की इस बात में हम और एक पात्र सूरदास का नाम जोड़ना चाहते हैं, क्योंकि हमारी दृष्टि में नागर जी को अमरत्व प्रदान करने में इस पात्र का योगदान भी कम नहीं है ।

कतिपय अपवादों को छोड़ दिया जाए तो नागर जी के चरित्र सपाट चरित्र नहीं हैं। दैनंदिन जीवन के साधारण से साधारण क्रिया-कलापों के बीच से भी उन्होंने अपने चरित्रों की स्वभावगत तथा अन्य विशेषताओं को स्पष्ट किया है। समग्रतः सामान्य जीवन से ग्रहण किए गए साधारण पात्रों के चरित्र चित्रण में उन्हें अधिक सफलता मिली है। नागर जी के उपन्यासों के चरित्र चित्रण का यह अत्यन्त सशक्त पक्ष है। कथातत्त्व की भाँति उनके उपन्यासों का चरित्रशिल्प भी उनके उपन्यासों की लोकप्रियता तथा साहित्यिक

वैशिष्ट्य का एक प्रधान कारण है । 'उपन्यास मानव चरित्र का चित्र है।' प्रेमचन्द के इस कथन को नागर जी की कृतियाँ प्रमाणित करती हैं ।[11] नागर जी ने अपने उपन्यासों में चरित्र चित्रण विधि को इस तरह प्रस्तुत किया है कि ये उपन्यास पात्रों के अजायबघर लगते हैं। नागर जी की सब से बड़ी विशेषता उनकी आमफहम भाषा थी, जिसके कारण पाठकों के एक बहुसंख्य वर्ग तक उनकी पहुँच थी। इस टकसाली भाषा में क्षेत्रिय बोलियों की चाशनी वह मिलाते थे, उससे न केवल रचनाओं की स्वाभाविकता बढ़ जाती थी, बल्कि उनके पात्र अपने जीवन्त रूप में पाठक के सामने मूर्तिमान हो जाते थे ।[12] उनके पहले उपन्यास 'महाकाल' (भूख) से लेकर 'पीढियाँ' तक की पात्र-सृष्टि की विलक्षणता निरन्तर समृद्ध और घनी होती चली गई है। हमने यहाँ 'खंजन नयन' के सूरदास के चरित्र के सबलतम व दुर्बलतम पक्ष को उजागर करने की कोशिश की है।

खंजन नयन' उपन्यास का केन्द्रीय अमर चरित्र सूरदास :

'खंजन नयन' पात्रों की दृष्टि से अन्य उपन्यासों की तुलना में सीमित चरित्रों वाला उपन्यास है। इस उपन्यास में इतिहास प्रसिद्ध चरित्र भी विद्यमान है। यहाँ नागर जी ने सूरदास के चरित्र को जितना महत्त्व दिया है, उतना अन्य पुरुष चरित्र को नहीं । सूर गाथा को नागर जी कल्पना मिश्रित मौलिकता के साथ प्रस्तुत करते हैं । यहाँ एक सामान्य मानव से असामान्य मानव बनने की जीवनगाथा बड़े ही प्रभावक ढंग से प्रस्तुत हुई है । डॉ. शरद नागर के आवासीय परिसर में आयोजित 'अमृत स्मृति' कार्यक्रम में डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित ने कहा था "नागर जी कहानियों, उपन्यासों के लेखक और अविस्मरणीय पात्रों के सृजक ही नहीं, गंभीर सर्वेक्षण और समाजशास्त्र के अध्येता भी थे।"[13] यह स्मृति, यह प्रशंसा ऊपरी तौर की नहीं है, नागर जी इसके संपूर्ण हकदार हैं ! 'खंजन नयन' में अनेक पात्रों के बीच सहज सम्मान प्राप्त सूरदास को प्रमुख पुरुष-पात्र-नायक के रूप में कृतिकार ने प्रस्तुत किया है।

सूरदास एकाधिक नामधारी है, यथा-माँ की आँखों का तारा 'सूरज', पिता का प्रिय 'सूर्यनाथ' 'सूरा' और भक्तों का 'सूर स्वामी'। हिन्दी साहित्य में कवि, संगीतज्ञ और साधक के रूप में सुविख्यात सूरदास 'खंजन नयन' के नायक हैं। नायकत्व के लिए जरूरी तमाम क्रिया-कलाप उनमें मौजूद हैं। सूरदास का नायकत्व ही इस चरित्र की अमरता का द्योतक है। 'हिन्दी साहित्याकाश को अपनी रस-सिक्त वाणी एवं अलौकिक प्रतिभा से सूर्यवत् ज्योतित करने वाले भक्त और कवि सूरदास मध्यकाल में चलने वाली सगुण भक्ति धारा की कृष्णभक्ति शाखा के प्रमुख एवं प्रतिनिधि कवि स्वीकार किये जाते हैं। यह कृष्ण-भक्ति के अनन्यतम साधक तो थे ही, कृष्ण काव्य के भी अनन्यतम साधक एवं गायक थे।"[14] श्री शरण की सूरचरित्र की इस व्याख्या के अनुरूप ही सूरदास का व्यक्ति त्व आलोच्य उपन्यास में निखरा है। बाल्यकाल से ही सूर प्रतिभासंपन्न थे। उन्नीस वर्ष की आयु तक वे ज्योतिष, काव्य, संगीत आदि में निपूण हो जाते हैं। सूरदास दृष्टिविहिन होते हुए भी कलाविहिन नहीं है। उन्होंने मन की ऐसी आँखे पायी है कि उन्हें अपनी जन्मांधता की कभी भी शिकायत नहीं रही। सूरदास के चरित्र को लेकर डॉ. पुष्पा बंसल का कड़ा कथन है कि "उपन्यास अपने आप में 'सूर बाबा के प्रति मेरी निश्छल श्रद्धा' के दर्शन भले ही कराता हो, परन्तु कवि शिरोमणि सूरदास के जीवन को आद्यंत प्रस्तुत करने का कार्य नहीं करता। यह 'निश्छल श्रद्धा' ही है, संभवतः जिसने कवि सूरदास को साधक सूरदास के

रूप में ढाल दिया, जिसने जन्मांध कवि-गायक-भाव भरे सूर को ज्योतिष, नक्षत्र विद्या, संगीत विद्या, काव्य-शासन, शकुन विचार, समय विचार, प्रश्न आदि व्यावहारिक विद्याओं में पारंगत दिखाकर उनके जीवन में आने वाली प्रत्येक कठिनाई का निराकरण तथा जीवन में मिलने वाली प्रत्येक सफलता के कारण रूप में इन्हीं विद्याओं को रख दिया है।"[15] भले ही इस आक्षेप में तथ्य हो, परन्तु समग्रतया देखा जाय तो सूर चरित्र में उपर्युक्त विशेषताएँ भरपूर मात्रा में मौजूद हैं। कवि न सही साधक ही सही, परन्तु संसार की बाधक विडम्बनाओं को वे जिस तरह से पार करते हैं, वह निश्चय ही सराहनीय है।

नागर जी ने सूरदास को नायक बनाकर वस्तुपक्ष का ताना-बाना बुना है। 'खंजन नयन' की वस्तु इतिहास, किंवदन्तियों एवं मौलिक कल्पनाओं के चौखटे में कसी है। 'खंजन नयन' का कथानक ऐतिहासिक पात्र सूरदास को लेकर निर्मित किया गया है। सूर के विवादाग्रस्त जीवन को विश्वसनीय बनाने के लिए इतिहासपरक तथ्यों में कल्पना का प्रयोग किया गया है। उपन्यास की कथावस्तु फिल्म की कथावस्तु-सी लगती है ।[16] प्रस्तुत उपन्यास में सूरदास की जीवन-सम्बन्धी लगभग उनतीस-तीस प्रमुख घटनाओं का संयोजन किया गया है। इनमें से लगभग ग्यारह घटनाएँ ही ऐसी हैं जो सूरदास की जीवनी लेखकों के द्वारा अनुमोदित है। बाकी लगभग अठारह-उन्नीस घटनाओं में लेखक की मौलिक सर्जनशीलता है, या कहीं-कहीं जनश्रुतियों के आधार पर भी घटनाओं का चित्रण किया गया है। जैसा कि स्पष्ट है-आलोचक आलम में 'खंजन नयन' प्रौढ़ और श्रेष्ठ कृति के रूप में चर्चित है। इस उपन्यास के लेखक ने कथानायक सूर से सम्बन्धित ऐतिहासिक तथ्यों को यथावत ग्रहण करके उन्हें तार्किकता की कसौटी पर कसने के पश्चात बुद्धिग्राही होने पर ही स्वीकारा है। नागर जी ने सूरदास के जीवन एवं व्यक्तित्व को प्रामाणिकता के माध्यम से सुलझाने की चेष्टा की है। इसी कारण 'खंजन नयन' का कथानक हिन्दी के विभिन्न जीवनीपरक उपन्यासों के कथानकों से भिन्न प्रतीत होता है ।[17] वस्तुपक्ष की यही भिन्नता उपन्यास को, खासकर जीवनीपरक उपन्यासों में अग्रीम ही नहीं, अपितु 'कुछ हटकर' की स्थिति पैदा कर, अलग स्थान देती है। सूरदास की जीवन-गाथा प्रस्तुत करने में किन्हीं तथ्यों को सृजन की आवश्यकताओं के अनुसार परिवर्तित अथवा पुनर्सर्जित भी किया गया है।

नागर जी एक चिंतन-मननशील कथाकार हैं। वे कथा के माध्यम से व्यक्ति की अच्छाईयाँ-बुराईयाँ दर्शाते हैं। उनके चिंतन के केन्द्र में व्यक्ति है, किन्तु समाज से कटा-छटा नहीं, उससे पूर्णतः प्रभावित, आप्लावित और संलग्न है। वे व्यक्ति को उसकी परिस्थितियों की जटिलताओं में उभारते हैं, उसे सतत संघर्षरत दिखाते हैं। उनके उपन्यासों में प्रत्येक व्यक्ति अपनी-अपनी स्थितियों से जूझता है। लेखक ने कहीं भी नियतिवाद को प्रश्रय नहीं दिया। उन्होंने सफलताओं-विफलताओं के लिए व्यक्ति को ही कारण माना है। सूरदास का भक्त कवि का सर्वस्वीकृत रूप 'खंजन नयन' उपन्यास में सामान्य मानव बना देना और मानवसहज प्रस्तुतिकरण लेखक की बहुत बड़ी उपलब्धि मानी जाएगी । नागर जी लोक जीवन के साथ गहराई से जुड़े हैं तथा प्रेमचन्द जी की तरह जिन्दगी की गहरी छान-बीन करते हैं और बनावटी पात्रों की सृष्टि से बचते हैं। किसी पूर्व धारणा या विचार को वे पात्र रचना का मूलाधार नहीं बनाते । ...उनके लिए जीवन प्रमुख है, परिस्थितियाँ प्रधान है। उनमें जन्म लेने और

विकसित होने वाले पात्र अपनी-अपनी परिधि के अनुकूल अपने विचारों, भावों और कल्पनाओं का विकास करतें हैं।"[18] हमें मानना पड़ेगा कि एक बहुत बड़े कवि, साधक एवं भक्त को मानव के रूप में चित्रित करना नागर जी जैसे कलाबाज कृतिकार के लिए सहज संभव था। सूरदास के परम स्नेही दाऊबाबा ने सूर को श्याम-प्राप्ति का मार्ग बताया और कर्तव्य-पथ की ओर प्रेरित करते हुए कहा है कि-"पुत्र, यदि तू काया से शूरवीर होता तो तुझसे कहता कि देश की स्वतंत्रता के लिए विदेशी दुष्टों का नाश कर । पंडित होता तो कहता कि स्वाध्याय में आसक्ति रमा । तू है कवि, गायक है। हज़ारों लाखों को अपनी काव्य और गायन कलाओं से रिझा सकता है। लोक मानस विखंडित और आस्थाहीन हो रहा है । इन्हें जीने के लिए आस्था चाहिए, शांति चाहिए, रस चाहिए। भजन-किर्तन से अपनी आसक्ति बढ़ा और लोक मंगल के लिए नाम प्रचार कर । तेरा भी मंगल होगा। राजगढ़ के स्वामी हरिदास इन दिनों में बृन्दावन में रस साधना कर रहे हैं। एक बार उनके पास भी हो आ । तुझे प्रेरणा-प्रकाश मिलेगा।"[19] यहाँ नागर जी एक बड़े लक्ष्य की प्राप्ति के तहत मानो सूर को तैयार करते हैं । यह कहना अनुचित न होगा कि मानव से महामानव बनने की जीवनगाथा बड़े की प्रभावक ढंग से प्रस्तुत हुई है।

सूरदास में भी मानव-सहज कुछ दुर्बलताएँ थीं, लेकिन उन दुर्बलताओं के फंदे में पड़ने के बावजूद भी सूरज-मन को श्याम-मन ने ऐसी परिस्थितियों में किसी-न-किसी के निमित्त सँभाल ही लिया है। सूरदास का कंतो के प्रति मन से लगाव दिखाया गया है, परन्तु दोनों की कहीं ऐसी गिरावट नहीं दिखाई गई जिससे दोनों के चरित्र पर कलंक लगा हो । सूरदास का बाहरी व्यक्तित्व सिर्फ आँखों को छोड़कर बड़ा आकर्षक था। वे ज्ञान पिपासु, भक्त कवि एवं ज्योतिष ज्ञानी थे। ज्योतिष विद्या के अनेक चमत्कार उपन्यास में वर्णित है । सूरदास के चरित्र का चरमोत्कर्ष भक्ति में देखा जा सकता है। उनकी भक्ति दंभ, अहंकार आदि से मुक्त है । सूरदास की भक्ति महाप्रभु वल्लभाचार्य की दीक्षा के बाद उस अनन्यासक्ति की स्थिति तक पहुँच जाती है, जहाँ सर्वत्र भगवान की लीला के ही दर्शन होते हैं। तुलसी की तुलना में सूर चरित्र सामाजिक दायित्व के प्रति पूर्ण सजग और प्रतिबद्ध नहीं है, वह तो अपने श्याम सखा के साथ केलि करने वाला आत्मकेन्द्रित चरित्र है। वास्तव में वे उद्धारक नहीं, कलाकार है। 'खंजन नयन' उपन्यास में नागर जी सामाजिक, राजनीतिक प्रसंगों में व्यक्ति की क्षमताओं का आकलन करते चले हैं। ऐतिहासिक प्रसंगों के माध्यम से भी उन्होंने व्यक्ति की सामाजिकता को ही रेखांकित किया है। उनका व्यक्ति परिस्थितियों का दास है । रचनाकार ने व्यक्ति को उसके परिवेश में गहराया है, किसी विचारधारा का आरोप उन्होंने नहीं किया ।

'खंजन नयन' जीवनीपरक उपन्यास होने के नाते लेखक को इतनी स्वतंत्रता नहीं मिली है, क्योंकि उसके पात्र तो वास्तविक या यथार्थ हैं । ऐतिहासिक तथ्यों के साथ वह छेड़छाड़ नहीं कर सकता। पात्र के तथ्यों के बारे में जहाँ इतिहास मौन होता है, वहाँ कथानुरूप-पात्रानुरूप काल्पनिक स्वतंत्रता ले लेता है, जिससे उस चरित्र की प्रतिभा खण्डित न हो। हम मानेंगे कि सूर चरित्र लेखकीय स्वतंत्रता का उत्तमोत्तम सर्जन है, जिसमें नागर जी ने सूर भक्तों की शिकायतों की परवाह न करते हुए अपनी सृजनधर्मिता निभायी है। कहना न होगा कि सूर व नागर जी दोनों ने एक दूजे को अमरत्व प्रदान किया है ।

नागर जी अपनी चरित्रसृष्टि के कारण विशेष चर्चा में रहे हैं। उन्होंने अपनी ताकतवर कलम से अद्वितीय पात्रों की सर्जना की है। आपका यह कमाल ही माना जाएगा कि आपने सपाट और सरल दिखने वाली स्थितियों और पात्रों की ओर विशेष ध्यान दिया है, परन्तु नगण्य से दिखने वाले चरित्रों में उन्होंने गांभीर्य, हास्य, औदार्य, उत्थान, पतन, महानता और नीचता आदि को लंबे केनवास पर अंकित करके मानवीय वृत्तियों की अन्तर्बाह्य सीमाहीनता को बड़े पैमाने पर अंकित किया है। सारांशतः कहा जा सकता है कि नागर जी के द्वारा रचित सूरदास व निर्गुनियाँ जैसे चरित्र हिन्दी साहित्य की एक अमूल्य निधि बन गये हैं। ये चरित्र इतिहास या समाज के निर्जीव पुतले न होकर, सच्चे अर्थों में मनुष्य के रूप में सामने आये हैं। चरित्रों की अमरता की पहचान इससे बड़ी और क्या हो सकती है कि ऐसे अमर चरित्रों के सर्जन से ही नागर जी सुज्ञ पाठकों को बार-बार याद आते रहे हैं और आने वाली पीढ़ियाँ उन्हें बड़े आदर-सम्मान के साथ याद करती रहेगी ! अस्तु ।

संदर्भ सूची :

1. वर्मा, सं. रामचन्द्र -मानक हिन्दी कोश (दूसरा खण्ड), हिंदी साहित्य सम्मलेन प्रयाग, 1992, पृ.215
2. डॉ.सुजाता-हिन्दी उपन्यासों के असामान्य चरित्र, मंगल प्रकाशन, जयपुर, 1991, पृ.21-22
3. वर्मा, सं. रामचन्द्र -मानक हिन्दी कोश (पहला खण्ड), हिंदी साहित्य सम्मलेन प्रयाग, 1991, पृ.162
4. प्रदीप, डॉ.वंदना-देवेश ठाकुर के उपन्यासों में चरित्र-शिल्प, ज्ञान प्रकाशन, कानपुर, 2008, पृ.9
5. नागर, शरद -अमृतलाल नागर रचनावली खण्ड-10, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली, 1997, पृ.155
6. वार्ष्णेय, डॉ.कुसुम-उपन्यास के रचना-प्रसंग, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007, पृ.103
7. डॉ.सुजाता-हिन्दी उपन्यासों के असामान्य चरित्र, मंगल प्रकाशन, जयपुर, 1991, पृ.96
8. झाल्टे, डॉ.दंगल -उपन्यास समीक्षा के नए प्रतिमान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1987, पृ. 55
9. शर्मा, डॉ.प्रदीपकुमार-हिन्दी उपन्यासों का शिल्पविधान, अभय प्रकाशन, कानपुर, 1990, पृ.36
10. पटेल, डॉ.बी.जे. -अमृतलाल नागर के उपन्यास भारतीयता की पहचान, चिंतन प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण, 2010, पृ. 301
11. मिश्र, प्रकाशचंद्र -अमृतलाल नागर का उपन्यास साहित्य, साहित्य भारती, कानपुर, प्रथम संस्करण, पृ. 255
12. उत्तरप्रदेश, अमृतलाल नागर स्मृति अंक, अप्रैल,1990, पृ.31
13. नया साहित्य, जून, 2008, पृ. 8
14. श्री शरण-सूर व्यक्तित्व और कृतित्व, आधुनिक प्रकाशन, दिल्ली, 2002, पृ. 7
15. बंसल, डॉ.पुष्पा- अमृतलाल नागर भारतीय उपन्यासकार, प्रेम प्रकाशन मंदिर दिल्ली, 1987, पृ.60
16. यादव, डॉ.वाचस्पति -अमृतलाल नागर के साठोत्तरी उपन्यासों में इतिहास एवं कल्पना, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006, पृ. 94
17. नायक, डॉ.मुरलीधर -अमृतलाल नागर जीवन और साहित्य, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2003, पृ. 63
18. आलोचना, जनवरी, 1966, पृ. 144
19. नागर, शरद -अमृतलाल नागर रचनावली खण्ड-3, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली, 1997, पृ. 88-89